

This is the subtitle of PDF, Use long text here.

रघुवीर सहाय

डा. सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
इंटरमीडिएट १२

वैदेशिक राजनीति का देश सैवत लोगों की समस्याओं का शब्दाकार होता ~~मिलता~~ है रघुवीर सहाय की कविताओं में। भारतीय लोकतंत्र से अपनी विशंगतियों और देश की जनता की दयनीय स्थिति — रघुवीर सहाय की रचनाओं में ~~वे~~ इहारे हुए दिखाई पड़ते हैं। कवि ने जीवन के सामान्य दृश्यों को अपने प्रभावशाली में समाहित किया है। जीवन और उसकी ~~दृष्टि~~ उनकी कविताओं में कभी व्यंग्य कभी दर्द कभी विडम्बना ~~विशंगतियों~~ बनकर ~~वे~~ अंदर ही घिसटती चली जाती हैं। राजनीति पर कटाक्ष इनका प्रिय शौखन रहा है। यह व्यंग्य केवल तत्कालीन कमजोरी या छुदछुदाने भरको नहीं है, बल्कि व्यवस्था की नाकामी है ~~जिस~~ कुछ न कर सकने की छटपटाहट है। कविता सोचने भर से आगे बढ़ बातों के पीछे के अर्थ को भी कुरैदती है। ~~वे~~ कवि केवल जानकारी भर नहीं देता, बल्कि तथ्यों को भी परख ~~कर~~ करना चाहता है।

खरै जब अवबद्ध होती हैं, ~~उनका~~ स्वरूप बहुत कुछ ~~हृश्य~~ तब दृश्यपट रघुवीर सहाय की कविताओं जैसा होता है।

प्रेमचंद के अनुसार, "वह (साहित्यकार) वैदेशिक और राजनीति के पीछे चलनेवाली सचाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सचाई है।"

This is the subtitle of PDF, Use long text here.

रघुवीर सहाय

आदमी से एक दर्जा नीचे रहने का नाम हो या फिर भागीय लोकसेव से अपनी विशिष्टताओं के बीच दूर-दूर तक फैली की व्याख्या । लोकसेव के अन्तर्गत में नियामक भूमिका में रहनेवाले इस 'आम आदमी' के वर्णित जीवन, मरणाशन्न परिस्थितियाँ और मौत की ओर बढ़ते कदमों की आहत की परिचायक होती हैं रघुवीर सहाय की कविताएँ । उनकी कविताएँ मुख्यतः सवारी के पीछे की कहानियाँ होती हैं । आदमी को इस स्थिति तक लानेवाली परिस्थितियों का सजीव वर्णन उनकी कविताओं की विशेषता है । मुख्य रूप से, जिन विषयों को आधिकंश कवि छोड़ते दृष्टि से देखते हैं, कवि उन्हीं विषयों पर कविता कर मानस पर तीव्र चोट करता है । कविताओं की भाषा शुद्ध बोधवाचक की, लेकिन कठोरताओं और व्यंग्यात्मक अंशों में होती हैं । सच्ची बात सदैव कड़वी लगती है, इसलिए कवि की बातें विषाक्तियों का वजन-सी लगती हैं ।